1. समाजशास्त्र का परिचय

समाजशास्त्र का उद्‌भव
(Emergence of Sociology)

आप एक नवीन विषय समाजशास्त्र को पढ़ने की शुरूआत कर रहे हैं। हम इस विषय के सन्दर्भ में वह सब जानेंगे जो इस स्तर पर आवश्यक है और इसकी शुरुआत हम समाजशास्त्र की एक विषय के रूप में उत्पत्ति से करेंगे। समाज में बनने वाले एवं विकसित होने वाले साधन, तकनीक, यन्त्र, परम्पराएँ, सामाजिक मूल्य इत्यादि तात्कालिक समाज की आवश्यकता के कारण ही जन्म लेते हैं इसी प्रकार किसी विषय की उत्पत्ति भी समाज में तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होती है। जब मनुष्य की रुचि अन्तरिक्ष में बढ़ी तो खगोल विज्ञान (Astronomy) का विकास हुआ, समुद्र की गहराईयों को जानने के लिये समुद्र विज्ञान (Oceanography) का विकास हुआ, बीमारियों से लड़ने के लिये आयुर्वेद एवं चिकित्सा विज्ञान (Medical Science) इत्यादि का विकास हुआ उसी प्रकार हमने समाज की गतिविधियों को समझने के लिये अर्थशास्त्र (आर्थिक गतिविधियाँ) राजनीतिशास्त्र (राजनीतिक गतिविधियाँ) इत्यादि का विकास किया। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक किसी ऐसे विज्ञान का विकास नहीं हुआ था जो सम्पूर्ण समाज का अध्ययन करता हो। किन्तु वैश्विक सामाजिक व्यवस्थाओं में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा था। इनमें से कुछ ऐसी सामाजिक स्थितियाँ जिन्हें समाजशास्त्र के उद्‌भव के लिए जिम्मेदार माना जाता है, निम्न हैः– सन् 1450 से 1800 के बीच के समय में यूरोप में वाणिज्यिक क्रान्ति (Commercial Revolution) हुई। पुर्तगाल, इंग्लैण्ड, हालैण्ड और स्पेन जैसे देशों में एशिया के देशों से व्यापार को बढ़ाने की होड़ शुरू हो गई, भारत और अमेरिका जैसे देशों की खोज हुई। इससे यूरोप का व्यापार एक वैश्विक व्यापार में बदलने लगा। कागज की मुद्रा का विकास हुआ। बैकिंग व्यवस्था का विकास हुआ, मध्यमवर्ग का उदय हुआ, मध्यकालीन यूरोप में पुनर्जागरण (Renaissance) हुआ इसे वैज्ञानिक क्रान्ति की शुरूआत माना जाता है, चिकित्सा के क्षेत्र में मानव शरीर विच्छेदन (Dissection of Human Body) को स्वीकार किया गया, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, गणित व खगोल विज्ञान इत्यादि का विकास हुआ।

फ्रांसीसी क्रान्ति (The French Revolution)– सन् 1789 में फ्रांस में क्रान्ति हुई। इस क्रान्ति द्वारा स्वतन्त्रता, समानता एवं बंधुत्व का विचार उभर कर सामने आया, अब लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गये। क्रान्ति से पूर्व फ्रांस में राजशाही थी व धार्मिक आडम्बर भी बहुत अधिक थे, आम जनता अकाल, कुपोषण, सामाजिक असमानता व शासन के अत्याचारों से पीड़ित थी। क्रान्ति द्वारा व्यवस्था बदल गई व लोकतन्त्र की स्थापना हुई। फ्रांसीसी क्रान्ति में मान्टेस्क्यु (Montesquieu) वाल्टेयर (Voltaire) व रूसो (Rousseau) जैसे दार्शनिक विचारकों के विचारों का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है, इनके विचारों से तार्किकता का विकास हुआ।

औद्योगिक क्रान्ति (The Industrial Revolution)– अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में यूरोप के कुछ देशों की तकनीक और सामाजिक–सांस्कृतिक व आर्थिक स्थितियों में बड़ा बदलाव आया। इसे औद्योगिक क्रान्ति नाम दिया गया। औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत इंग्लैण्ड से मानी जाती है। इस क्रान्ति ने यूरोप व अन्य देशों के नागरिकों के सामाजिक व आर्थिक जीवन में अनेक बदलाव किये। उद्योगों का मशीनीकरण हुआ, उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई, पूँजीवाद का विकास हुआ, औद्योगिक श्रमिकों के रूप में नये वर्ग का उदय हुआ, लोग कृषि व कुटीर उद्योगों को छोड़कर बड़े उद्योगों में मजदूरी करने लगे। नये नये शहरों का विकास होने लगा किन्तु इस व्यवस्था में श्रमिकों का शोषण बड़े पैमाने पर हो रहा था।

इस प्रकार यूरोप में होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व आर्थिक बदलावों ने एक ऐसे विषय की आवश्यकता को उत्पन्न किया जो सामाजिक व्यवस्था का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन कर सके अतः सन् 1838 में फ्रांसीसी दार्शनिक आगस्ट काम्टे (Auguste Comte) ने एक विषय के रूप में समाजशास्त्र की शुरूआत की। उन्होंने पहले इसे सामाजिक भौतिकी (Social Physics) नाम दिया जिसे बाद में समाजशास्त्र (Sociology) कर दिया।

भारत में समाजशास्त्र का विकास
(Development of Sociology in India)

भारत में समाजशास्त्र की एक विषय के रूप में शुरूआत बहुत देर से हुई। किन्तु सामाजिक जीवन के विषय में अध्ययन प्राचीन काल से ही होता रहा है। 'रामायण' व 'महाभारत' जैसे ग्रन्थ, कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' व मनु द्वारा लिखित 'मनुस्मृति' तथा ऐसे ही अनेक ग्रन्थों में हमें तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था के विषय में पता चलता है किन्तु यह ग्रन्थ किसी विषय के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर नहीं लिखे गये थे। यूरोप में समाजशास्त्र के उद्‌भव के प्रमुख कारण फ्रांसीसी क्रान्ति व औद्योगिक क्रान्ति माने जाते हैं किन्तु भारत में समाजशास्त्र बहुत बाद में आया तथा उस समय भारत ब्रिटिश अधीनता में था इस कारण यहाँ प्रारम्भिक समाजशास्त्रीय अध्ययन अधिकांशतः यूरोपियन विद्वानों द्वारा किये गये।

भारत में समाजशास्त्र की वास्तविक शुरूआत बम्बई

विश्वविद्यालय से मानी जाती है। जहाँ सन् 1919 में पैट्रिक गेडिस (Petric Geddes) की अध्यक्षता में समाजशास्त्र विभाग की शुरूआत हुई हालांकि ऐच्छिक विषय के रूप में यह सन् 1914 से पढ़ाया जाने लगा था। इसी तरह 1917 में ऐच्छिक विषय के रूप में कलकत्ता विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की शुरूआत हुई। 1921 में लखनऊ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की शुरूआत हुई तथा 1923 में आन्ध्र व मैसूर विश्वविद्यालयों में भी इसकी शुरूआत हुई। 1952 में 'Indian Sociological Society' की स्थापना की गई। जिससे सभी समाजशास्त्रियों को जुड़ने का आधार मिला। प्रारम्भ में समाजशास्त्र को अन्य विषयों के साथ पढ़ाया जाता था। जिनमें मानवशास्त्र एवं अर्थशास्त्र प्रमुख थे। स्वतन्त्रता से पूर्वकाल में समाजशास्त्र का अधिक विस्तार नहीं हो पाया। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के कुछ ही वर्षों बाद समाजशास्त्र का विकास तेजी से हुआ तथा अनेक राज्यों के विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में इसे पढ़ाया जाने लगा और समाजशास्त्र की लोकप्रियता बढ़ने लगी। 'टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल वर्क' लखनऊ तथा 'इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साईन्स' आगरा जैसे अनुसंधान केन्द्रों की भी स्थापना हुई, जहाँ समाजशास्त्रीय अनुसंधान होने लगे। भारत के प्रमुख समाजशास्त्रियों में से कुछ निम्न है– एस.सी. दूबे, एम.एन. श्रीनिवास, ए.के. सरन, डी.एन. मजुमदार, जी.एस. घुरिये, के.एम. कपाड़िया, पी.एच. प्रभु, ए.आर. देसाई, इरावती कर्वे, राधाकमल मुकर्जी, योगेन्द्र सिंह इत्यादि। भारतीय समाजशास्त्रियों में एम. एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई 'संस्कृतिकरण' 'पश्चिमीकरण' व 'प्रभुत्व जाति' की अवधारणाओं व राधाकमल मुकर्जी द्वारा दी गई 'सामाजिक मूल्य' की अवधारणा के अलावा वैश्विक स्तर पर कोई उल्लेखनीय सिद्धान्त व अवधारणाओं का विकास भारतीय समाजशास्त्रियों द्वारा नहीं हुआ हो जो चिन्ता के साथ–साथ सुधार का विषय भी है। वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि समाजशास्त्र को केवल कक्षाओं में पढ़ाने वाले विषय तक सीमित न रखकर इसमें प्रायोगिक कार्य व अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि समाज को इससे वास्तविक अर्थों में लाभ हो सके।

समाजशास्त्र की प्रकृति
(Nature of Sociology)

समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र को समझने के पश्चात् हमें समाजशास्त्र की प्रकृति को समझना चाहिए। यहाँ हमें यह ध्यान रखना होगा कि विषय की प्रकृति से तात्पर्य यह पता लगाना होता है कि यह विषय विज्ञान है अथवा कला है या कुछ और है। विज्ञान शब्द सुनते ही हमारी कल्पना में प्रयोगशाला और उसमें काम में ली जानी वाली वस्तुएँ ध्यान में आती है। लेकिन हमें यह समझना जरूरी है कि विज्ञान कहते किसे हैं? स्टूअर्ट चेस (Stuart Chase) विज्ञान का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहते हैं "विज्ञान का सम्बंध पद्धति से है न कि विषय सामग्री से।" इस प्रकार चेस विषय सामग्री की तुलना में ज्ञान प्राप्त करने की पद्धति को विज्ञान मानते हैं। इसी प्रकार कार्ल पियर्सन (Carl Pearson) लिखते हैं कि "सभी विज्ञानों की एकता उसकी पद्धति में है न कि विषयवस्तु में।"

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि विज्ञान का सम्बंध ज्ञान प्राप्त करने की पद्धति से है अर्थात् एक विशेष प्रकार के तरीके से प्राप्त ज्ञान को हम विज्ञान कहते हैं और यह ज्ञान वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है जिसके प्रमुख चरण (Steps) निम्न हैं–

1. समस्या/अध्ययन विषय का चयन
2. उपकल्पना का निर्माण
3. तथ्यों का संकलन
4. तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण
5. सामान्यीकरण/सिद्धान्त निर्माण

अब तक हम यह तो समझ गये हैं कि वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर प्राप्त ज्ञान ही विज्ञान होता है अतः अब विज्ञान की प्रमुख विशेषताओं को भी जानना चाहिए जो निम्न प्रकार है–

1. **वस्तुनिष्ठता (Objectivity)–** वस्तुनिष्ठता का अर्थ अध्ययनकर्ता द्वारा निष्पक्ष अध्ययन करने से है। अध्ययनकर्ता अपने विचारों, मनोवृत्तियों एवं पूर्वधारणाओं को अध्ययन में सम्मिलित नहीं करके तथ्यों के आधार पर अध्ययन करता है।
2. **सत्यापनीय (Verifiability)–** विज्ञान में संकलित ज्ञान एवं तथ्यों पर सन्देह होने पर उनका सत्यापन किया जा सकता है।
3. **निश्चितता (Definiteness)–** वैज्ञानिक ज्ञान वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर ही प्राप्त किया जा सकता है जिसके निश्चित चरण (Steps) होते हैं।
4. **कार्यकारण सम्बन्ध (Cause-effect relationship)–** विज्ञान कार्यकारण सम्बन्धों को जानने का प्रयास करता है अर्थात घटनाओं के पीछे छिपे कारणों को जानने का प्रयास करता है।
5. **सामान्यीकरण (Generalization)–** विज्ञान में अध्ययन के द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार पर किसी सामान्य नियम को ज्ञात किया जाता है।
6. **पूर्वानुमान (Predictability)–** विज्ञान में तथ्यों के अध्ययन के आधार पर घटनाओं के भविष्य का पूर्वानुमान लगाया जाता है।
7. **आनुभाविकता (Empiricism)–** विज्ञान में अध्ययनकर्ता इन्द्रियों की सहायता से तथ्यों को एकत्र एवं अवलोकन करता है अर्थात यह ज्ञान कोरी कल्पना पर आधारित नहीं होता है।
8. **सार्वभौमिकता (Universality)–** वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर बनाए गये नियम सार्वभौमिक होते हैं अर्थात् यह समय व स्थान के साथ बदलते नहीं है।

समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति
(Scientific Nature of Sociology)

अब तक हम यह जान चुके हैं कि विज्ञान किसे कहते हैं इसलिए अब हम समाजशास्त्र की प्रकृति को समझेंगे। समाजशास्त्र के जनक आगस्ट काम्टे सहित, इमाईल दुर्खीम, मेक्सवेबर इत्यादि विद्वानों ने समाजशास्त्र को आरम्भ से ही विज्ञान माना है। हम निम्न आधार पर समाजशास्त्र को विज्ञान मानते हैं–

1. वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग
2. वस्तुनिष्ठ अध्ययन
3. सत्यापनीय
4. निश्चितता
5. कार्य–कारण सम्बन्धों की स्थापना
6. सामान्यीकरण करना
7. पूर्वानुमान लगाना
8. आनुभाविक अध्ययन
9. सार्वभौमिकता

उपर्युक्त बिन्दुओं को हम पूर्व में समझ चुके हैं किन्तु हमें यह ध्यान रखना होगा कि समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है और इस कारण इसकी अपनी सीमाएँ (Limitations) है प्राकृतिक विज्ञानों की विषय सामग्री विवेकशील नहीं होती है किन्तु समाजशास्त्र की विषय सामग्री मनुष्य होते हैं जो कि अपने व्यवहार में परिवर्तन ला सकते हैं अतः समाजशास्त्र में सत्यापनीयता व पूर्वानुमान लगाना प्राकृतिक विज्ञानों से अधिक कठिन होता है। इसी प्रकार प्राकृतिक वैज्ञानिकों का अपनी अध्ययन सामग्री से किसी प्रकार का अपनापन, प्यार, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, लगाव या नफरत इत्यादि नहीं होता है। किन्तु एक समाजशास्त्री अपने जैसे दूसरे मनुष्यों का अध्ययन करता है तो उसके मन में पूर्वधारणा हो सकती है जो उसके अध्ययन को प्रभावित कर सकती है ऐसी स्थिति में समाजशास्त्र में वस्तुनिष्ठ अध्ययन करना प्राकृतिक विज्ञानों में अधिक कठिन है। अतः हमें यह ध्यान रखना होगा कि समाजशास्त्र समाज विज्ञान है, प्राकृतिक विज्ञान नहीं है।

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य
(Sociologial Perspective)

पिछले अध्ययन में समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र पढ़कर हम यह जान चुके हैं कि एक ही समस्या अथवा अध्ययन विषय का अध्ययन अलग–अलग विज्ञान कर सकते हैं तो अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि एक ही विषय का अध्ययन करने पर भिन्न–भिन्न विज्ञानों के अध्ययन में क्या अन्तर होगा।

इस अन्तर को समझने के लिये हमें परिप्रेक्ष्य (Perspective) को समझना होगा, आपको इस बात को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि हर विज्ञान का अपनी अध्ययन समस्या को अध्ययन करने का एक नजरिया अथवा दृष्टिकोण होता है जो कि दूसरे विज्ञानों से अलग होता है इस नजरिये अथवा दृष्टिकोण को हम परिप्रेक्ष्य कहते हैं। इसे अधिक समझने के लिए हम समाजशास्त्री ई. चिनोय (E. Chinoy) द्वारा अपनी पुस्तक ''सोशियोलोजिकल पर्सपैक्टिव'' (Sociological Perspective) में दिये गये उदाहरण से समझेंगे– चिनोय के अनुसार एक डबलरोटी का अध्ययन अर्थशास्त्री द्वारा उसकी बाजार में माँग, उत्पादन लागत, विक्रय मूल्य, लाभ–हानि इत्यादि आर्थिक परिप्रेक्ष्य में किया जायेगा तथा एक इतिहासकार द्वारा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य द्वारा उसका अध्ययन किया जाएगा जिसमें वह डबलरोटी की उत्पत्ति का इतिहास तथा उसके प्रसार को जानने की कोशिश करेंगे इसी प्रकार एक पोषाहार विशेषज्ञ यह देखेंगे कि इससे खाने वाले के शरीर को कितना पोषण मिल रहा है और यह स्वास्थ्यप्रद भी है अथवा नहीं, एक मनोवैज्ञानिक का परिप्रेक्ष्य अलग होगा वह इसका मूल्यांकन खान–पान की आदतों के दृष्टिकोण से कर सकते हैं मगर एक समाजशास्त्री समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से यह देखेंगे कि यह डबलरोटी सामाजिक सम्बन्धों को कैसे प्रभावित कर रही है।

हम जान चुके हैं कि प्रत्येक विज्ञान का घटना को अध्ययन करने का अपना एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य होता है। आप सोच रहे होंगे कि एक डबलरोटी सामाजिक सम्बन्धों को कैसे प्रभावित कर सकती है तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हो सकता है डबलरोटी खाते समय बच्चे आपस में झगड़ पड़े हो सकता है इस बात को लेकर पति–पत्नी अथवा परिवार के अन्य सदस्य भी झगड़ लें, हो सकता है कि डबलरोटी खाकर बच्चे बहुत खुश हो जायें और परिवार के सदस्यों में आपसी स्नेह अधिक प्रगाढ़ हो जाये अतः हर वस्तु सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावित कर सकती है।

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का अर्थ
(Meaning of Sociological Perspective)

समाजशास्त्री परिप्रेक्ष्य का अर्थ जानने से पहले हमें परिप्रेक्ष्य का अर्थ जानना होगा, परिप्रेक्ष्य शब्द की अंग्रेजी पर्सपेक्टिव (Perspective) होती है, पर्सपेक्टिव लैटिन भाषा के पर्सपेक्ट (Perspect) से बना है जिसका अर्थ 'सीन थ्रू' (Seen Through) अर्थात किसी माध्यम से देखना अथवा एक सिरे से दूसरे सिरे तक देखना अथवा निरीक्षण करना है। अब हम समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को विभिन्न विद्वानों के दृष्टिकोण से जानेंगे–

थियोडरसन एवं थियोडरसन (Theodarson and Theodarson) के मतानुसार ''मूल्य, विश्वास, अभिवृत्ति एवं अर्थ व्यक्ति को सन्दर्भ और दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जिसके अनुसार वह परिस्थिति का अवलोकन करता है, परिप्रेक्ष्य कहलाता है।''

लुन्डबर्ग (G.A. Lundberg) अपनी पुस्तक ''फाउन्डेशन ऑफ सोशियोलाजी'' (Foundation Of Sociology) में परिप्रेक्ष्य

को समझाते हैं। इनके अनुसार हमारी स्थापित आदतों की व्यवस्था से सन्दर्भ परिधि का निर्माण होता है। आदतों की यह व्यवस्था लोक भाषा में होती है जिन्हें विश्वास, सिद्धान्त अथवा जीवन दर्शन कहा जाता है।

गुडे एवं हॉट (W.J. Goode and P.K. Hatt) ने अपनी पुस्तक ''मेथड्स इन सोशियल रिसर्च'' (Metheds in Social Research) में बताया है कि किसी घटना, वस्तु या स्थिति का अध्ययन विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है। इनके अनुसार किसी विषय का अध्ययन क्षेत्र, प्रकृति, सिद्धान्त, अवधारणाएँ एवं परिभाषाएँ उसके परिप्रेक्ष्य को निर्धारित करती है।

अब तक हम समझ चुके हैं कि समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य अध्ययन का एक दृष्टिकोण है जो इसे अन्य विज्ञानों से अलग करता है। यहाँ हमें ध्यान रखना होगा कि समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत हम किसी भी घटना अथवा स्थिति का अध्ययन उसके सामाजिक सम्बन्धों तथा सामजिक संस्थाओं, सामाजिक मूल्यों, प्रस्थिति एवं भूमिका, सामाजिक परिवर्तन सामाजिक नियन्त्रण तथा सामाजिक व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में करते हैं।

प्रमुख रूप से समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के दो भाग अथवा पक्ष हैं प्रथम– इसमें हम व्यक्तियों के मध्य बनने वाले सम्बन्धों, उनके निर्माण की प्रक्रिया तथा उनके प्रभाव का अध्ययन करते हैं। द्वितीय– इसमें हम किसी घटना अथवा अध्ययन वस्तु का हमारी सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक सम्बन्धों, प्रस्थिति एवं भूमिका, सामाजिक मूल्यों, मानदण्ड एवं सामाजिक व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करते हैं।

समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा
(Meaning and Definition of Sociology)

समाजशास्त्र के उद्भव को जानने के बाद हमें सबसे पहले समाजशास्त्र के अर्थ को जानना आवश्यक है क्योंकि जब तक हम इसके अर्थ को नहीं समझेंगे तब तक एक विद्यार्थी के रूप में हमारा ज्ञान अधूरा ही रहेगा। आपको यह ध्यान रखना चाहिये की किसी विषय के अर्थ को जानने के लिये उसकी परिभाषा को समझना जरूरी है। विभिन्न विद्वान समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र को अपने अनुभव से इस प्रकार परिभाषित किया है:–

किंग्सले डेविस (Kingsley Devis) के अनुसार ''समाजशास्त्र मानव समाज का अध्ययन है।''

एच. डब्ल्यु. ओडम (H.W. Odum) के अनुसार ''समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज का अध्ययन करता है।''

मैकाइवर एवं पेज (MacIver and Page) के अनुसार ''समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के विषय में है।'' इनके अनुसार ''सम्बन्धों के इसी जाल को हम समाज कहते हैं।''

एच.एम. जानसन (H.M. Johnson) के अनुसार ''समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का विज्ञान है।''

गिलिन एवं गिलिन (Gillin and Gillin) के अनुसार ''समाजशास्त्र व्यापक अर्थ में व्यक्तियों के एक दूसरे के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली अन्तःक्रियाओं का अध्ययन कहा जा सकता है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन से हमें पता चलता है कि डेविस और ओडम समाज के अध्ययन तथा मैकाइवर एवं पेज सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन पर जोर देते हैं इसी प्रकार जानसन सामाजिक समूहों और गिलिन एवं गिलिन अन्तःक्रियाओं का अध्ययन करने वाले विज्ञान को समाजशास्त्र मानते हैं। अतः समाजशास्त्र की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती है, किन्तु एक बात हमें पता होनी चाहिये कि सभी परिभाषाओं में भिन्नता होते हुए भी समानता है क्योंकि सामाजिक अन्तःक्रियाओं से सामाजिक सम्बन्ध बनते हैं और सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर ही समूहों का विकास होता है तथा समाज का विकास भी सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर ही होता है।

अब हम इन परिभाषाओं के आधार पर समाजशास्त्र के अर्थ को जानने का प्रयास करेंगे। क्या आप जानते हैं कि जब दो या दो से अधिक व्यक्ति एक दूसरे से बातचीत कर रहे होते हैं तो उसे अन्तःक्रिया कहते हैं और यदि अन्तःक्रिया में स्थायित्व हो और वह अर्थ पूर्ण (उद्देश्यपूर्ण) भी हो तो सामाजिक सम्बन्ध बन जाते हैं। जानसन कहते हैं कि समूह का तात्पर्य केवल व्यक्तियों से नहीं है बल्कि व्यक्तियों के मध्य उत्पन्न होने वाली अन्तःक्रियाओं की व्यवस्था से है।

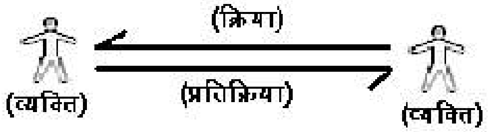

क्रिया + प्रतिक्रिया = अन्तःक्रिया

(Action + Reaction = Interaction)

अन्तःक्रिया + उद्देश्य + स्थायित्व = सामाजिक सम्बन्ध

(Interaction + Purpose + Stability = Social Relation)

हम कह सकते हैं कि समाजशास्त्र वह समाज विज्ञान है जो सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक संस्थाओं (परिवार, विवाह, नातेदारी, शिक्षण संस्थाएँ, राजनीतिक संस्थाएँ, धार्मिक संस्थाएँ इत्यादि), समूहों, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक नियन्त्रण, प्रस्थिति एवं भूमिका इत्यादि का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से करता है। समाजशास्त्र के विद्यार्थी होने के कारण हमें यह पता होना चाहिये कि समाजशास्त्र समाज के किसी एक पक्ष का अध्ययन ही नहीं

करता है बल्कि हम सम्पूर्ण समाज को एक इकाई मानकर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करते हैं। यहाँ हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि परिभाषाओं में जिन बिन्दुओं व अवधारणाओं का अध्ययन समाजशास्त्र में करना बताया गया है उसके अलावा भी बहुत सी अवधारणाओं का अध्ययन समाजशास्त्र में किया जाता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को हम आगे समझेंगे। अन्त में हम समाजशास्त्र को सामाजिक व्यवस्था (Social Order) का विज्ञान कह सकते हैं। क्योंकि समाज व्यवस्था में सामाजिक संस्थाएं, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक नियन्त्रण, सामाजिक सम्बन्ध, प्रस्थिति एवं भूमिकाएँ इत्यादि सभी आ जाते हैं।

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र (SCOPE OF SOCIOLOGY)

समाजशास्त्र के अर्थ को जानने के बाद उसके विषय क्षेत्र को जानना अत्यन्त आवश्यक है। विषयक्षेत्र का अर्थ किसी भी विषय की वह सम्भावित सीमाएँ हैं जहां तक कि वह विषय फैला हुआ है अथवा उस विषय का अध्ययन सम्भव है। समाजशास्त्र एक नवीन विषय है। इस कारण से इसके विषय क्षेत्र को निर्धारित करना सरल कार्य नहीं है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने इस पर अपने–अपने मत प्रकट किये हैं जिसे प्रमुख रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है:

(1) स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal School) :

इस सम्प्रदाय के मुख्य प्रर्वतक जार्ज सिमेल् (Georg Simmel) एवं एफ. टॉनीज (F. Toennies) हैं तथा अन्य समर्थक विद्वानों में वीरकान्त (A. Vierkant), वॉन वीज (L. Von Wiese), एवं मैक्सवेबर (Max Weber), प्रमुख माने जाते हैं। यहाँ हमें यह पता होना चाहिये कि स्वरूपात्मक सम्प्रदाय समाजशास्त्र को एक विशिष्ट एवं शुद्धविज्ञान (Pure Science) मानता है तथा इस विचारधारा के अनुसार अन्य विज्ञानों जैसे राजनीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, भौतिकशास्त्र इत्यादि की तरह ही समाजशास्त्र की भी अपनी समस्या अथवा सामग्री होनी चाहिए जिसका अध्ययन केवल समाजशास्त्र में ही किया जाये तथा जो अन्य विज्ञानों से अलग भी हो। यह सम्प्रदाय, वस्तु अथवा घटना की अन्तर्वस्तु के स्थान पर उसके स्वरूप के अध्ययन पर बल देता है। इस मत को अधिक समझने के लिये हमें कुछ प्रमुख विद्वानों के विचारों को भी जानना चाहिए।

- **जार्ज सिमेल के विचार** : इनके अनुसार प्रत्येक वस्तु का एक स्वरूप (Form) एवं एक अन्तर्वस्तु (Content) होती है जो एक दूसरे से अलग होते हैं तथा अन्तर्वस्तु और स्वरूप का एक दूसरे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। (उदाहरणतः खाली गिलास अथवा बोतल को स्वरूप मान सकते हैं तथा उसमें भरे जाने वाले पदार्थ को अन्तर्वस्तु मान ले तो अन्तर्वस्तु कोई भी हो उसका गिलास के स्वरूप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।) सिमेल के अनुसार सामाजिक सम्बन्धों को भी स्वरूप एवं अन्तर्वस्तु के आधार पर अलग किया जा सकता है और समाजशास्त्र में हमें केवल सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों (सहयोग, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा इत्यादि) का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि अन्तर्वस्तु का अध्ययन अन्य विज्ञान कर रहे हैं।

- **वीरकान्त के विचार** : वीरकान्त समाजशास्त्र को विशिष्ट विज्ञान मानते थे तथा उनका मानना था कि समाजशास्त्र में मानसिक सम्बन्धों के स्वरूपों का अध्ययन होना चाहिए यह स्वरूप ही व्यक्तियों को एक दूसरे से बाँधते हैं। इनके अनुसार प्रेम, सम्मान, लज्जा, सहयोग, संघर्ष, स्नेह, यश इत्यादि मानसिक सम्बन्धों से ही सामाजिक सम्बन्ध विकसित होते हैं।

- **मेक्सवेबर के अनुसार** : मेक्सवेबर भी समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान मानते थे तथा उनका मानना था कि समाजशास्त्र में केवल सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाना चाहिए, इनके अनुसार प्रत्येक क्रिया सामाजिक क्रिया नहीं होती है बल्कि वही क्रियाएँ सामाजिक होती है जिसमें क्रिया को करने वाले व्यक्ति अथवा व्यक्तियों द्वारा लगाए गये व्यक्तिनिष्ठ अर्थ के अनुसार वह क्रिया दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार द्वारा प्रभावित हो तथा उसी के अनुसार उसकी गतिविधि निर्धारित हो। इस प्रकार वेबर के अनुसार समाजशास्त्र में सामाजिक क्रियाओं का ही अध्ययन होना चाहिये।

इस प्रकार आप समझ ही गये होंगे की स्वरूपात्मक विचारधारा समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान मानती है तथा सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों के अध्ययन को ही समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र मानती है।

इस विचारधारा की प्रमुख कमियाँ : इस विचारधारा की सोरोकिन तथा फिचर (J.H.Fichter) जैसे समाजशास्त्रियों ने आलोचना की है। जिसमें से प्रमुख निम्न हैं–

1. सामाजिक सम्बन्धों में स्वरूप तथा अन्तर्वस्तु में भेद करना अत्यन्त मुश्किल है।
2. सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप तथा अन्तर्वस्तु एक दूसरे से प्रभावित होते हैं।
3. समाजशास्त्र को अन्य विज्ञानों से पृथक एक स्वतन्त्र तथा शुद्ध विज्ञान बनाना सम्भव नहीं है क्योंकि सभी समाज विज्ञान एक–दूसरे पर निर्भर हैं।
4. कानून शास्त्र, अर्थशास्त्र सहित कुछ अन्य विषय भी सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों (समझौता, संघर्ष, शोषण, श्रम विभाजन इत्यादि) का अध्ययन करते हैं।

(2) समन्वयात्मक सम्प्रदाय (Synthetic School) :

इस सम्प्रदाय के प्रमुख समर्थक दुर्खीम (Emile Durkheim) सोरोकिन (P.A. Sorokin) जिन्सबर्ग (M. Ginsberg) हॉबहाऊस (L. T. Hobhouse) इत्यादि प्रमुख हैं। स्वरूपात्मक सम्प्रदाय के विपरीत समन्वयात्मक सम्प्रदाय के विचारकों की मान्यता है कि समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान

है और इसका अध्ययन क्षेत्र सम्पूर्ण समाज है। इनके अनुसार समाज जीवधारी शरीर के समान है जिसके सभी अंग एक दूसरे से जुड़े हुए होने के कारण एक दूसरे से प्रभावित होते हैं अतः इन अंगों के पारस्परिक सम्बन्धों को समझना आवश्यक है। इसलिए समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान के रूप में समग्र अध्ययन करना चाहिए। इस विचारधारा को समझने के लिये हम कुछ प्रमुख विद्वानों के विचारों को जानेंगे–

● **दुर्खीम के विचार** : फ्रांसीसी समाजशास्त्री दुर्खीम के मतानुसार पहले समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान बनाकर अन्य विज्ञानों की तरह अपने स्वतन्त्र नियमों का विकास करना चाहिए फिर सामान्य विज्ञान के रूप में अन्य समाज विज्ञानों में समन्वय स्थापित करना चाहिए दुर्खीम के अनुसार ''हमारा विश्वास है कि समाजशास्त्रियों को विशिष्ट विज्ञानों जैसे कानून, इतिहास, धर्म, सामाजिक, अंकशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि में किये गये शोध से नियमित रूप से परिचित रहने की बहुत अधिक आवश्यकता है क्योंकि इनमें उपलब्ध सामग्रियों से ही समाजशास्त्र का निर्माण होना चाहिए। दुर्खीम के अनुसार समाजशास्त्र की अध्ययन वस्तु सामाजिक तथ्य (Social Facts) हैं।

● **सोरोकिन के विचार** : सोरोकिन समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान मानते थे, इनके अनुसार प्रत्येक सामाजिक विज्ञान विशिष्ट प्रकार की घटनाओं का अध्ययन करता है और यह घटनाएँ एक दूसरे से जुड़ी हुई रहती हैं अतः समाजशास्त्र को इन सभी घटनाओं में जो सामान्य है उसका अध्ययन करना चाहिए। एक उदाहरण से इसे समझा जा सकता है।

आर्थिक	abcdef
राजनीतिक	abcghi
धार्मिक	abcjkl
वैधानिक	abcmno
मनोरंजनात्मक	abcpqr

सारणी से पता चलता है कि सभी विज्ञानों के अध्ययन क्षेत्र में abc आते हैं किन्तु वे उसका विशेष अध्ययन नहीं करते हैं। अर्थशास्त्र def का, राजनीतिशास्त्र ghi का तथा अन्य समाज विज्ञान इसी प्रकार अपने–अपने विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र का अध्ययन करते हैं किन्तु इन सभी में जो सामान्य तथ्य (abc) है यही समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र है।

इस विचारधारा की प्रमुख कमियाँ– इस सम्प्रदाय की प्रमुख कमियों को विविध समाजशास्त्रियों ने बताया है जो निम्नानुसार हैं–

1. समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान बनाने के प्रयास में यह अन्य समाज विज्ञानों की एक खिचड़ी बन कर रह जाएगा।

2. समाजशास्त्र अन्य समाजशास्त्र पर पूरी तरह आश्रित हो जाएगा तथा इसका कोई स्वतन्त्र विषय क्षेत्र नहीं रहेगा।

3. समाजशास्त्र की अपनी पद्धति भी विकसित नहीं हो पायेगी।

निष्कर्ष– समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के सम्बन्ध में दोनों सम्प्रदायों के विचारकों के विचारों को जानने के बाद हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि दोनों ही सम्प्रदायों के विचार एकाकी हैं। समाजशास्त्र न तो पूरी तरह विशिष्ट विज्ञान है और न ही पूरी तरह सामान्य विज्ञान। समाजशास्त्र अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप सामान्य तथा विशिष्ट दोनों तरह के दृष्टिकोण को अपनाता है।

समाजशास्त्र का अन्य समाज विज्ञानों से सम्बन्ध
(Relation of Sociology to other Social Science)

अब तक हम जान चुके हैं कि समाजशास्त्र एक समाज विज्ञान है। कुछ अन्य समाज विज्ञानों में अर्थशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान इत्यादि प्रमुख हैं। यह सभी विज्ञान अपने–अपने तरीके से समाज के किसी एक पक्ष का अध्ययन करते हैं। अध्ययन की आवश्यकताओं के कारण सभी समाज विज्ञान एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। समाजशास्त्र तथा अन्य प्रमुख समाज विज्ञानों में सम्बन्ध को हम निम्नानुसार समझ सकते हैं–

1. समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र (Socialogy and Economics)– अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित है। कार्लमार्क्स, मेक्सवेबर, परेटो जैसे विद्वानों को समाजशास्त्री और अर्थशास्त्री दोनों ही माना जाता है। सामाजिक घटनाएँ आर्थिक घटनाओं पर प्रभाव ड़ालती हैं और आर्थिक घटनाएँ सामाजिक घटनाओं को प्रभावित करती है। थामस (Thomas) के अनुसार वास्तव में अर्थशास्त्र समाजशास्त्र के विस्तृत विज्ञान की शाखा है। कुछ विषयों जैसे औद्योगिकरण, नगरीकरण, श्रम विभाजन, बेरोजगारी, सामाजिक कल्याण इत्यादि का दोनों विज्ञानों द्वारा अध्ययन किया जाता है।

अन्तर–

1. समाजशास्त्र सामान्य विज्ञान है। अर्थशास्त्र विशिष्ट विज्ञान है।

2. समाजशास्त्र विशेष रूप से सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करता है। जबकि अर्थशास्त्र आर्थिक घटनाओं का अध्ययन करता है।

3. समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र अर्थशास्त्र की तुलना में व्यापक है।

2. समाजशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान (Sociology and Political Science)– राजनीति विज्ञान में राजनीति घटनाओं, कानून प्रशासन, सम्प्रभुता, राज्य इत्यादि का अध्ययन होता है। दोनों विज्ञान एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। सामाजिक व राजनीतिक घटनाएँ एक दूसरे को प्रभावित करती

हैं। व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार राजनीतिक घटनाओं से और राजनीतिक व्यवहार सामाजिक घटनाओं से प्रभावित होता है।

अन्तर–

1. समाजशास्त्र का परिप्रेक्ष्य व्यापक है जबकि राजनीति विज्ञान का परिप्रेक्ष्य सीमित है।

2. समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है जबकि राजनीति विज्ञान एक विशिष्ट विज्ञान है।

3. समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं के एक हिस्से के रूप में राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन भी करता है जबकि राजनीति विज्ञान विशेष रूप से राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन करता है।

3. समाजशास्त्र तथा इतिहास (Sociology and History)– जार्ज.ई. होबार्ट के अनुसार ''इतिहास भूतकालीन समाजशास्त्र है और समाजशास्त्र वर्तमान का इतिहास है।'' यह कथन बताता है कि दोनों विषय एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित है। इतिहास प्रमुख रूप से भूतकालीन महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन एवं व्याख्या करता है। इतिहास घटनाओं को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है।

अन्तर–

1. इतिहास की रुचि का विषय महत्वपूर्ण घटनाएँ होती है जबकि समाजशास्त्र में सामान्य घटनाओं का भी अध्ययन किया जाता है।

2. समाजशास्त्र में घटनाओं का विश्लेषण किया जाता है जबकि इतिहास में घटनाओं का विवरण होता है।

3. समाजशास्त्र में सभी घटनाओं का अध्ययन किया जाता है जबकि इतिहास में भूतकाल की घटनाओं का ही अध्ययन होता है।

4. समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है जबकि इतिहास एक विशिष्ट विज्ञान है।

4. समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान (Sociology and Psychology)– मनोविज्ञान में व्यक्तित्व, संवेग, मनोवृत्ति, सीखना, अभिप्रेरणा इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति का व्यक्तित्व एवं मानसिक स्थितियाँ होते हैं। व्यक्ति का व्यवहार उसकी सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। इसलिये समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान एक–दूसरे पर आश्रित है।

अन्तर–

1. समाजशास्त्र में सामूहिक व्यवहार का अध्ययन होता है जबकि मनोविज्ञान व्यक्ति की मानसिक विशेषताओं व व्यक्तिगत व्यवहार का अध्ययन करता है।

2. समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र व्यापक है जबकि मनोविज्ञान का विषय क्षेत्र व्यक्ति केन्द्रित होने के कारण सीमित है।

3. समाजशास्त्र का परिप्रेक्ष्य सामाजिक है जबकि मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य वैयक्तिक (Indiavidualistic) है।

अब हम जान चुके हैं कि समाजशास्त्र और अन्य समाज विज्ञानों में क्या सम्बन्ध है। यहाँ हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि धीरे–धीरे समाजविज्ञान एक–दूसरे के ज्यादा निकट आ रहे हैं तथा अध्ययन की आवश्यकता के कारण दो विषयों को जोड़ने वाली इनकी शाखाएँ भी बन रही है। जैसे 'राजनीतिक समाजशास्त्र' (Political Sociology) जो राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र को निकट लाती है। मनोविज्ञान की शाखा 'सामाजिक मनोविज्ञान' (Social Psychology) समाजशास्त्र व मनोविज्ञान को अध्ययन की दृष्टि से निकट लाती है तथा समाजशास्त्र की शाखा 'आर्थिक जीवन का समाजशास्त्र' (Sociology of Economic Life) अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र को निकट लाती है। समाज विज्ञान क्योंकि समाज का ही अध्ययन करता है अतः इनका एक–दूसरे पर निर्भर रहना स्वाभाविक है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।
- सन् 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति और औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक व आर्थिक स्थिति में मूलभूत परिवर्तन आया।
- समाज में हो रहे परिवर्तनों का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करने के लिए सन् 1838 में अगस्ट कॉम्ट ने समाजशास्त्र की स्थापना की।
- फ्रांसीसी दार्शनिक अगस्त कॉम्ट समाजशास्त्र के जनक हैं।
- समाजशास्त्र का शाब्दिक अर्थ 'समाज का शास्त्र' या 'समाज का विज्ञान' है।
- भारत में समाजशास्त्र की वास्तविक शुरूआत सन् 1919 में बम्बई विश्वविद्यालय से मानी जाती है।
- समाजशास्त्र की प्रकृति वैज्ञानिक होने के कारण, समाजशास्त्र एक विज्ञान है।
- समाजशास्त्र वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर अध्ययन करता है।
- समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र प्रमुख रूप से दो भागों स्वरूपात्मक सम्प्रदाय तथा समन्वयात्मक सम्प्रदाय में बाँटा जा सकता है।
- स्वरूपात्मक सम्प्रदाय समाजशास्त्र को विशिष्ट विज्ञान मानता है।
- समन्वयात्मक सम्प्रदाय समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान मानता है।
- स्वरूपात्मक सम्प्रदाय के प्रमुख विचारकों में जॉर्ज सिमैल, टॉनीज, वॉन वीज, वीरकान्त और मैक्स वेबर है।
- समन्वयात्मक सम्प्रदाय के प्रमुख विचारकों में हॉबहाउस, दुर्खीम, जिन्सबर्ग तथा सोरोकिन है।
- विषय क्षेत्र वह सम्भावित सीमाएँ हैं जहाँ तक कि उस

विषय का अध्ययन सम्भव है।

- प्रत्येक विज्ञान का अध्ययन का एक नजरिया अथवा दृष्टिकोण होता है। जिसे परिप्रेक्ष्य कहते हैं।
- समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य की प्रकृति वैज्ञानिक है।
- समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य अन्य समाज विज्ञानों के परिप्रेक्ष्य से अलग है।
- सामाजिक विज्ञानों में प्रमुख रूप से अर्थशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान, मानवशास्त्र इत्यादि हैं।
- राजनीतिक समाजशास्त्र वह शाखा है जो समाजशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान को निकट लाती है।
- सभी जीव अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर है।
- पारिस्थितिकी वह विज्ञान है जो पृथ्वी के समस्त जीवों तथा पर्यावरण के मध्य आपसी सम्बन्धों का अध्ययन करता है।
- पारिस्थितिक में एक समय में जीवों की एक सीमित संख्या ही आश्रित रहकर अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है इस क्षमता को 'धारणी क्षमता' कहते है
- पारिस्थितिक तन्त्र करोड़ो वर्षों के प्राकृतिक उद्विकास का परिणाम है।
- केवल मनुष्य ही पारिस्थितिक तन्त्र का सन्तुलन कृत्रिम रूप से बिगाड़ सकता है।
- मनुष्य द्वारा प्राकृतिक सन्तुलन को पहुँचाई जा रही हानि से प्रकृति के सभी जीव प्रभावित हो रहे हैं।
- पृथ्वी स्थिर इकाई होने के कारण इसमें वृद्धि सम्भव नहीं है।
- जलवायु किसी स्थान का लम्बे समय तक का औसत मौसम होता है।
- परिवर्तन प्रकृति का नियम है तथा प्राकृतिक रूप से परिवर्तन की गति धीमी होती है।
- ओजोन गैस सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक पहुँचने से रोकती है।
- ओजोन परत के कारण हम पराबैंगनी विकिरण से बचे रहते हैं।
- ओजोन परत में छिद्र का मतलब ओजोन गैस का पर्याप्त मात्रा न बनना तथा इसकी परत का पतला हो जाना है।
- पर्यावरण को हानि पहुंचाने के लिए प्रमुख रूप से विकसित राष्ट्र जिम्मेदार है।
- प्लास्टिक तथा पॉलिथिन का उपयोग पर्यावरण को हानि पहुँचा रहा है क्योंकि यह पूरी तरह नष्ट नहीं होता है।
- ग्रीन हाऊस गैसों में वृद्धि के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. मनुष्य है–
   (अ) एक सामाजिक प्राणी
   (ब) एक जंगली प्राणी
   (स) एक जैविक प्राणी
   (द) एक असामाजिक प्राणी
2. समाजशास्त्र के जनक हैं–
   (अ) वेबर (ब) मार्क्स
   (स) दुर्खीम (द) अगस्ट कॉम्ट
3. समाजशास्त्र के जन्म के लिये प्रमुख रूप से कौनसा कारक उत्तरदायी है?
   (अ) फ्रांसीसी क्रान्ति व औद्योगिक क्रान्ति
   (ब) वैश्वीकरण
   (स) नगरीकरण
   (द) अन्य
4. भारत में समाजशास्त्र की वास्तविक शुरूआत कब से मानी जाती है?
   (अ) सन् 1980 (ब) सन् 2000
   (स) सन् 1919 (द) सन् 1900
5. समाजशास्त्र की प्रकृति है–
   (अ) वैज्ञानिक (ब) अवैज्ञानिक
   (स) अमानवीय (द) असामाजिक

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. समाजशास्त्र का जनक कौन है?
2. समाजशास्त्र को विशेष विज्ञान कौनसा सम्प्रदाय मानता है?
3. समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान कौनसा सम्प्रदाय मानता है?
4. वस्तुनिष्ठता का अर्थ बताइए?
5. समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का जाल है, यह कौन मानता है?
6. अर्थशास्त्र किसका अध्ययन करता है?
7. मनोविज्ञान के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु क्या है?
8. राजनीति विज्ञान किसका अध्ययन करता है?
9. ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन विशेष रूप से कौनसा विज्ञान करता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में दो अन्तर बताइए?
2. सामाजिक मनोविज्ञान क्या है?
3. अर्थशास्त्र का अर्थ लिखिए?
4. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को परिभाषित कीजिए?
5. समाजशास्त्र की दो परिभाषाएँ दीजिए?

6. समाजशास्त्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए?
7. जॉर्ज सिमैल के समाजशास्त्र के विषय में विचार बताइए?
8. समाजशास्त्र की प्रकृति क्या है?
9. विज्ञान का अर्थ बताइए?
10. वैज्ञानिक पद्धति की दो विशेषताएं बताइए?
11. समाजशास्त्र को विज्ञान मानने के दो कारण बताइए?
12. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का क्या अर्थ है?
13. समाजशास्त्र और इतिहास में दो अन्तर बताइए?
14. समाजशास्त्र और मनोविज्ञान में दो अन्तर बताइए?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. समाजशास्त्र के उद्भव के प्रमुख कारण बताइए?
2. समाजशास्त्र के अर्थ व परिभाषा को समझाइए?
3. क्या समाजशास्त्र एक विज्ञान है? स्पष्ट करें।
4. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को विस्तार से समझाइये?

उत्तरमाला—1. (अ) 2. (द) 3. (अ) 4. (स) 5. (अ)